हुवल हाफ़िज़

हुवल हाफ़िज़

सावाने हयात - *हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह*

اعوذ باللہ من الشیطان الرجیم۔

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

दरबार - हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह

तारिख ए उर्स – 18 मुहरमुल हराम

शिजराए चिश्तिया निजामिया फकरिया सुलेमानिया

अल्लाहुम्मा स्वल्ले वसल्लिम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन सैय्यिदिल अंबियाए व शफीउ़ल यौमुल क़दाए ०

*بسم الله الرحمن الرحيم

```दे मुझे ऐसी शराबे नाब ऐ``` _*परवर दिगार,,*_

```जिसके पीने से रहे तेरी ही``` _*वहदत*_ ```का खुमार।।```

```नफ्स``` _*सरकश*_ ```की शरारत से नहीं मुझको करार,,```

```वो शुजाअ़त दे करुं ता``` _*नफ्स अम्मारा*_ ```को ख्वार।।```

_*"हाफिज़े सैय्यद बहादुर"*_ ```पेशवा के वास्ते।।।।```

🔮 _इस्में गिरामी :- ***हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह अस्ल नाम हज़रत सैय्यद हाफिज़ "बहादुर अली शाह" (रजी.) हैं।_***
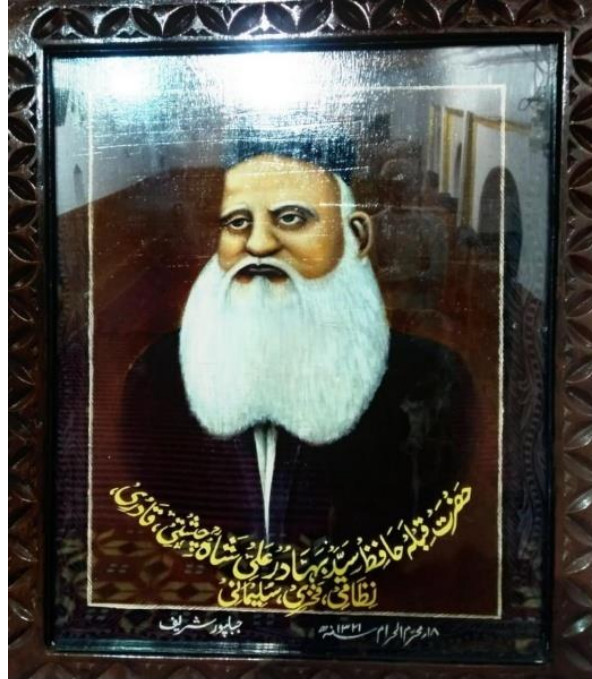
(तस्वीर - *हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह)*

हज़रत ख़्वाजा सरकार सैय्यद हाफिज़ बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह हसनी सैय्यदज़ादे हैं। आप का शिजराए नसब हुज़ूर बड़े पीर सरकार हज़रत सैय्यदना गौ़से आज़म दस्तगीर रज़ियलल्लाहू ताआला अन्ह (बगदाद शरीफ) से होते हुए इमाम हसन ए मुज्तबा व मौला अ़ली अलैहिस्सलाम से जा मिलता है।

🔮 वतन :- हज़रत ख़्वाजा सरकार सैय्यद हाफिज़ बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह उत्तर भारत के एक शहर अम्बेठा उतरप्रदेश, के रहने वाले हैं। तमाम दीनी-दुनियावी मज़हबी उलूम हासिल करने के बाद आप मजीद

इल्म हासिल करने की गरज से देहली शरीफ तशरीफ ले गये। देहली शरीफ में आपने जामा मस्जिद में कुरान ए पाक हिफ्ज़ किया। फिर आप मुरशिदे कामिल की तलाश में पानीपत से तौंसा शरीफ़ पंजाब (बवक्त पाकिस्तान) जहां सिलसिला ए चिश्तिया निज़ामिया फखरिया सुलेमानीया के अज़ीम सूफी बुज़ुर्ग **हज़रत ख्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंसवी माहरवी उर्फ पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह** से मुलाकात कर मुरीद हुए व ईबादतो रीयाज़त में मशगूल हुए। इसके बाद रमज़ान शरीफ के महीने में अपने पीरो मुरशिद हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंसवी उर्फ पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह के दस्ते मुबारक से सिलसिलाए चिश्तिया, क़ादरीया की खिलाफत से सरफराज़ व मुर्शिद के हुक्म से खिदमते दीनो खल्क़ के लिए तौंसा शरीफ से अम्बेठा वापस अपने शहर आ गये। वापस आने के बाद आपने अपने शहर के लोगों की इस्लाह की।*_

(तस्वीर- हज़रत ख्वाजा सुलेमान तौंसवी तौंसा शरीफ पाकिस्तान)

🔮 _जब हमारा मुल्क अंग्रेजों से जंगे आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था तो आपने भी अपने घरवालों के साथ साथ वतनपरस्ती का सुबूत देते हुए जंगे आज़ादी की लड़ाई में शिरकत की। यहां तक की 1857 ई. के जंगे गदर में जब उलमा ए किराम को फांसी के फंदे पर लटका दिया जा रहा था तो उस वक्त जंगे आज़ादी की लड़ाई में शामिल होने की वजह से आपके घर में भी अंग्रेजो ने आग लगा दी। जिस वजह से आपके अहले आयाल और आपने अम्बेठा से हिजरत की। इस सफर में आप रहमतुल्लाह अलैह अपने अहलो आयाल के साथ रात में पैदल सफर करते और दिन में खेत व जंगल में पनाह लेते। आप इस तरह अम्बेठा से ग्वालीयर तशरीफ़ लाए और कुछ दिन वहीं क़याम किया फिर आप वहां से नरसिंहपुर जिला (मध्य प्रदेश) में तशरीफ़ ले आए और खिदमते दीन व खल्क काम अंजाम देने लगे और आप हज़रत बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह नरसिंहपुर की एक मस्जिद में इमामत करने लगे। आपने लोगों को

वाज़ो नसीहत की और राहे हिदायत की दावत दी और नमाज़ पड़ने की तलक़ीन की, लोग आप की बातों से बहुत मुताअस्सिर हुए और इस तरह नरसिंहपुर में आपके मुरीदों और जानने मानने चाहने वालों का एक अच्छा खासा हलकाह बन गया।_

🔮 _हज़रत ख़्वाजा बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह का अक़्द निकाह:-*_ _*हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह ने नरसिंहपुर जिले में ही एक अच्छे दीनदार खानदान में सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल्लाहू अलैहि वसल्लम की पैरवी करते हुए निकाह किया। आप रहमतुल्लाह के एक साहबज़ादे मोहतरम भी थे जिनका नाम **हज़रत हाफ़िज़ ख़्वाजा सरकार सैय्यद गुलाम मुहियुद्दीन शाह उर्फ "भैया जी" रहमतुल्लाह अलैह** है जो कि अपने वक्त के बेहद साहिबे ब-कमाल बुज़ुर्ग शख्सियत गुज़रे हैं।_

🔮 _फिर एक दिन पीरे कामिल गौ़सुल आ़लम हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह को गैबी हुक्म हुआ कि आप **मध्य प्रदेश के शहर जबलपुर** तशरीफ ले जाएं। जबलपुर शहर की विलायत के लिए आपको चुना गया है और जबलपुर की सरज़मीन को ज़ीनत बख्शें........_

_शिजराए चिश्तिया सुलेमानीया मुख्तसिरा :-_

*अल्लाहुम्मा स्वल्ले वसल्लिम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व आले सैय्यिदिना मुहम्मद

بسم الله الرحمن الرحيم

ब हक़्के सरवरे आ़लम *"मुहम्मदे अरबी",,*

_ब हक़्क़े *"शेरे इलाही"* के नामे ऊस्त *"अ़ली",,,*_

_ब हक़्क़े *""नूर मुहम्मद""* ब *"ख्वाजा-ए-संघड़",,,,,*_

ब हक़्क़े *"शाह बहादुर अली"* जबलपुरी ।।।

"हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह का जबलपुर शहर की जानिब सफर :- _"

*हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह को एक दिन गैबी हुक्म हुआ कि आप जबलपुर तशरीफ ले जाएं और वहां तबलीग़े दीन का काम सरअंजाम दें लोगों को राहे हिदायत दिखाएं व सिलसिला ए चिश्तिया का नाम रौशन करें।*

✳️ _उधर **हज़रत सरकार मिर्ज़ा आग़ा मुहम्मद शाह नियाज़ी रहमतुल्लाह अलैह (रानीताल आग़ा चौक जबलपुर)**_
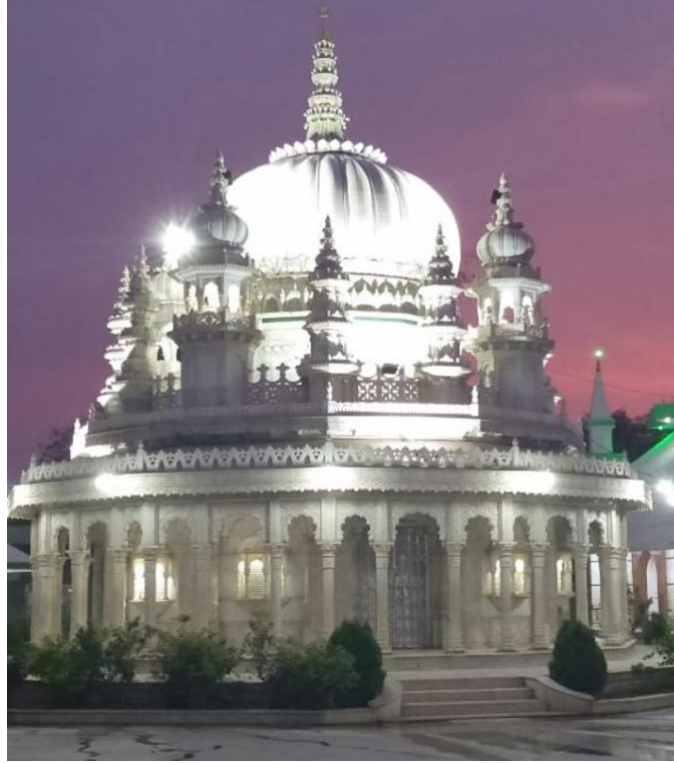
(दरगाह हज़रत आगा मोहम्मद शाह रहमतुल्ला अलैह जबलपुर)

को भी ख्वाब में बशारत हुई की जबलपुर की विलायत के लिए हज़रत हाफ़िज़ ख़्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को चुना गया है। यह हुक्म सुनते ही हज़रत मिर्ज़ा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर से नरसिंहपुर की तरफ रवाना हुए। नरसिंहपुर पहुंचने के बाद आपने देखा कि हर कोई _*हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह*_ के नरसिंहपुर छोड़कर जाने से अश्क़बार और बेहद उदास है।

✳️ _*हज़रत मिर्ज़ा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह ने बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि "हज़रत जबलपुर की सरज़मीं आप के मुबारक क़दमों के लिए बेताब है।"*_ यह सुनकर बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह ने इरशाद फरमाया कि मुझे पता है। उसके बाद आपने नरसिंहपुर में लोगों को वाजो़ नसीहत की और _*हज़रत मिर्ज़ा आगा़ मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह*_ के साथ जबलपुर शरीफ के लिए रवाना हो गए। जबलपुर शरीफ तशरीफ़ लाने के बाद आपने कुछ दिन _*हज़रत मिर्ज़ा आगा़ मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह*_ के घर में ही क़याम किया और उसके बाद मोतीनाला, बरियातलै (जबलपुर) से कुछ दूरी पर एक _*आलीशान मस्जिद तामीर करवाई जिसे आज के दौर में "सुलेमानी मस्जिद" के नाम से जाना जाता है। मस्जिद का कुछ हिस्सा हज़रत मिर्ज़ा आग़ा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह (रानीताल आगा चौक) ने भी दिया या दिलवाया और तामीरे मस्जिद में अपना नाम सुनहरे लफ्ज़ों में दर्ज करवाया। इसके साथ साथ हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने लोगों को

वाज़ो नसीहत व राहे हिदायत देने के लिए मस्जिद के बाजू में ही एक खानकाह शरीफ भी तामीर करवाई जिसे आज "खानकाहे सुलेमानीया"*_ के नाम से जाना जाता है और इसके अलावा एक रिहायशी मकान भी तामीर करवाया।

🔮 दिन ब दिन आपके मुरीद, अकीदतमंद और चाहने वालों का काफिला बढ़ता ही गया और आज भी बढ़ता ही जा रहा है। लोग आप _*हज़रत बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह*_ के फैज़ान से फैज़याब होते हैं यहां तक कि आपके दरबार में आपके चाहने वाले दूर-दूर से आते और अपने दिल की मुराद पूरी होते हुए पाते। आपसे बेतहाशा करामातों का ज़हूर हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी पूरी ज़िंदगी तब्लीग़े दीन और खिदमते खल्क़ के लिए वक़्फ कर दी।

🔮 _***विसाल :- हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 18 मुहर्रमुल हराम 1321 हिजरी में जबलपुर शरीफ में हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह को हलीम शाह का तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रस्तान में उस जगह मदफून किया जिस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह खुदा ताआ़ला की याद इबादतो रियाज़त में मशगूल रहते। आज भी आपके मज़ारे मुबारक में दिन रात आपके चाहने वालों का हुजूम लगा**

रहता है। लोग आज भी आपके फैज़ान से मालामाल हो रहे हैं।*_

(दरबार - हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह)

"हज़रत हाफ़िज़ ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर) के मशहूर खलीफा"

{1} _*🔮**क़ुतबुल अक़्ताब हज़रत किब्ला ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद "अब्दुल मजीद शाह" रहमतुल्लाह अलैह। आप रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के सगे भतीजे और साहिबे सज्जादा नशीन हैं**। हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के विसाल के बाद आपके ज़रिए ही सिलसिला ए चिश्तिया सुलेमानीया आगे बढ़ा और आज भी लोग आपकी आल औलाद बुज़ुर्ग से मुरीदो बैअत होकर दाखिले सिलसिला हो रहे हैं। आपका मज़ारे शरीफ हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत ख़्वाजा
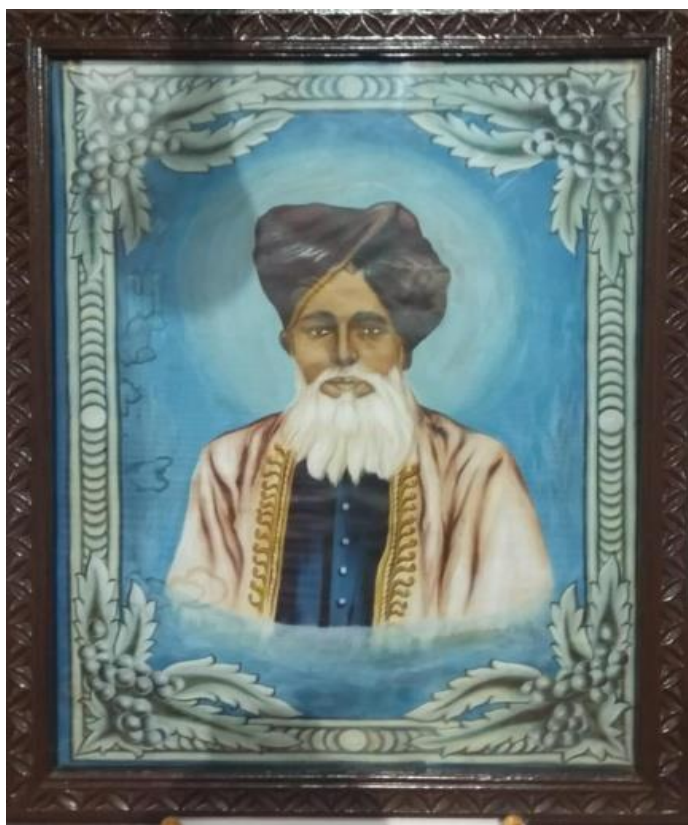
हाफिज़ सैय्यद गुलाम मुहियुद्दीन शाह उर्फ भैया जी रहमतुल्लाह अलैह के कब्रे अनवर के दरमियान में ही मौजूद है।*_

(तस्वीर – हज़रत ख़्वाजा सय्यद अब्दुल मजीद शाह रहमतुल्ला अलेह)

{2} _*🔮**हज़रत मौलाना हकीम अब्दुल ग़नी सहाब रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)। हज़रत बड़े मियां ससरका रहमतुल्लाह अलैह रिश्ते में आपके फुप्पा जान लगते हैं।** आप बेहद सादगी पसंद शख्सियत थे। बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के विसाल शरीफ के बाद और हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद अब्दुल मजीद शाह रहमतुल्लाह अलैह के जोबट शरीफ अपने अहलो आयाल के पास जाने के वक्त खानकाहे सुलेमानीया की बागडोर आप ही संभालते थे। आपका मज़ारे शरीफ आहात-ए दरगाह शरीफ दादा मियां (जबलपुर) में ही मौजूद है।*_

(दरगाह - हज़रत मौलाना हकीम अब्दुल ग़नी सहाब रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)।

{3} 🔮 _*गदाए हाफिज़ हज़रत मियां नत्थे खान उर्फ "केवड़िया जी" रहमतुल्लाह अलैह। आप रहमतुल्लाह अलैह बयक्त वक्त हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में हाज़िर रहते और सिर्फ आपको ही बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में खानकाहे सुलेमानीया की दहलीज में सोने का और वहीं रहने का शर्फ हासिल है। इसलिए आप रहमतुल्लाह अलैह को "केवड़िया जी" के नाम से जाना जाता है। आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदे खास में से एक हैं। आपका मज़ारे शरीफ भी आहात-ए दरगाह शरीफ दादा मियां में मौजूद है।*_

(दरगाह - हज़रत मियां नत्थे खान उर्फ "केवड़िया जी" रहमतुल्लाह अलैह)

हज़रत हाफिज़ ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने इसके अलावा कमो-बेश 50 बुजुर्गों को अपनी और सिलसिला ए चिश्तिया की खिलाफत से नवाज़ा। जैसे, **हज़रत ख़्वाजा सैय्यद साहब नरसिंहपुर वाले रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ख़्वाजा मुंशी जी नरसिंहपुर वाले रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत अल्लामा मौलाना मुल्ला अब्दुल करीम दाजी रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)।**

इसके अलावा आप रहमतुल्लाह अलैह के और भी दूसरे खुलफा हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ जगहों में फैल कर तब्लीग़े दीन और रुश्दो हिदायत का काम जारी रखा।

____

मंकाबत

_*सैय्यद हैं "बहादुर" हैं क़लन्दर हैं वली हैं,,*_

*क्या क्या मैं कहूं आपको सब कुछ हैं शहा आप।।*

*सब आपके दम से है जबलपुर की ज़ीनत,,*

*कहलाते हैं जबलपुर के सुल्ताने शहा आप।।*

{ ✍️ अज़ कलाम :- **सूफिए हिन्द हज़रत सरकार सैय्यद "गुल" अख्तर अशरफ अल अशरफीयुल जिलानी रहमतुल्लाह अलैह, किछौछा शरीफ।}**

(तस्वीर -सूफिए हिन्द हज़रत सरकार सैय्यद "गुल" अख्तर अशरफ अल अशरफीयुल जिलानी रहमतुल्लाह अलैह, किछौछा शरीफ।}

_*🌀 **करामत** :-*_

1- "अफगानी पठानों का बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के हाथों मुरीद होना" :-

_🌀 हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंस्वी अल मारूफ "पीर पठान" रहमतुल्लाह अलैह, (तौंसा शरीफ पाकिस्तान) के उर्से अक़दस के मौके अक्सर अफगानी पठानों का क़ाफिला आया करता था, जो **पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह** के मुरीदीन, मुतवस्सलीन (मानने, चाहने वाले) थे। _*बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर शरीफ, मध्य प्रदेश)*_ भी अपने पीरो मुर्शिद की बारगाह में हाज़िरी के लिए जाया करते थे।

एक दफा अफग़ानी पठानों की बस्ती पर डाकुओं ने हमला किया, जिस वजह से डाकुओं और कबीले वालों में खूनी जंग शुरू हो गई। जिसमें डाकूओं की फ़ौज़ अफगानी पठानों की फोज पर भारी पड़ रही थी तब क़बीले वालों को लगा कि हमारी शिकस्त से हमारी मां, बहन, बेटियों की इज़्ज़त आबरू को शदीद खतरा नज़र आ रहा है, साथ ही पूरी बस्ती लुटती पिटती तबाह व बर्बाद होने के मुकम्मल आसार नज़र आ रहे हैं।

🌀 तभी क़बीले के सरदार और साथ के लोगों ने _*"या पीर पठान अल-मदद"*_ का नारा लगाया। नारा लगाने के कुछ ही देर में एक अंजान घुड़सवार हाथ में तलवार लिए क़बीले वालों की मदद को आते नज़र आए और डाकुओं पर वार पर वार करते गए यहां तक की क़बीले वालों को फतह मिल गई। क़बीले वाले खुशियों का इज़हार करते हुए घुड़सवार की तरफ शुक्रिया अदा करने के लिए बढ़ने लगे तो घुड़सवार मुस्कुराते हुए वापस हुए और देखते ही देखते रुपोश (आंखों से ओझल) हो गए।

🌀 पठान जंग तो जीत गये लेकिन सोच में थे कि घुड़सवार था कौन?

किसी ने कहा कि मैंने _*पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह (तौंसा शरीफ पाकिस्तान)*_ के दरबार में देखा है। तब क़बीले के सरदार ने अपने कबीले के पठानों से कहा कि _*"उन घुड़सवार को जाकर तलाश करो और पता लग जाए तो खबर करो, हम सब अपने खैर-ख्वाह का शुक्रिया अदा करेंगे"।*_

*🌀 क़बीले के सरदार को एक रात बशारत हुई कि जल्द ही घुड़सवार से मुलाक़ात होगी।*

इस क़बीले के कुछ लोग पलटन (अंग्रेज़ी फौज) में शामिल हो गए जो कि मुल्के हिन्दुस्तान में जगह जगह तैनात रहते, जिसकी एक कम्पनी का ब्रांच जबलपुर शरीफ मध्यप्रदेश भी था।

इसी अफगानी पठानों की पलटन के सिपाहियों का गुज़र _*बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खानकाहे सुलेमानीया (सुलेमानी मस्जिद)*_ के सामने से हुआ तो लोगों की भीड़ लगी देखी, पता चला कि _*बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खानकाह है,*_ और आज दादा मियां के _*पीरो मुर्शिद शहबाज़ ए चिश्त हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंस्वी अल मारूफ "पीर पठान" रहमतुल्लाह अलैह*_ की तारीख है इस लिए चहल पहल और लोगों की भीड़ है। पलटन में अफगानी पठान सिपाहियों को हैरत हुई कि _*पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह*_ के मुरीदो खलीफा यहां इतनी दूर मौजूद है। लिहाज़ा देखना चाहिए कि है कौन। जैसे ही _*बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ पर नज़र पड़ी तो हैरानी की इंतिहा न रही अफगानी पठान सिपाही आपस में बात करने लगे कि ये तो वही घुड़सवार हैं जिसने हमारे क़बीले की डाकुओं के खिलाफ मदद की थी।

🌀 _*अफगानी सिपाहियों ने ये ख़बर अपने क़बीले तक पहुंचाई फिर कुछ वक़्त के बाद अफगानी पलटन और क़बीले वालों की अच्छी खासी तादाद बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ से मुरीद होने के लिए जबलपुर शरीफ आई। तब खानकाह शरीफ से लेकर शाह मम्मद के घर (मोतीनाला अस्पताल के आगे) तक रस्सा बांधा गया और रस्सा पकड़ कर _*बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह क़ादरी,चिश्ती, निज़ामी फख़री सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह*_ ने सभी अफगानी पठानों को मुरीद कर दाखिले सिलसिला किया।

_***विसाले "हाफिज़े" वाला गौहर है,,***_

***महे फैज़े "सुलेमान" जलवागर है।।***

***बा अनवारे मऐ कैफे "यदुल्लाह"***

_***बा रुए अ़र्श "मेअराजे" नज़र है।।***_

_*{ ✍️ अज़ कलाम :- **आलीजनाब उस्ताद गुलाम मुहम्मद आगाज़। }***_

"सुलेमानी मस्जिद जबलपुर की तामीर" :-

(मस्जिद सुलेमानी जबलपुर मध्यप्रदेश)

हज़रत हाफिज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह जब आप नरसिंहपुर से जबलपुर तशरीफ़ लाए तो कुछ समय हज़रत मिर्जा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह (आग़ा चौक जबलपुर) के यहां क़याम किया, फिर हज़रत आग़ा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह ने आप को मोतीनाला जबलपुर के पास ज़मीन दी या *दीलवाई, खरीदी उस ज़मीन पर आप ने सुन्नते रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की पैरवी करते हुए एक मस्जिद बनवाई। मस्जिद से मिली हुई ज़मीन पर एक रिहायशी इमारत व खानक़ाह शरीफ भी तामीर करवाई जिसमें कई लोग आप से रोज़ाना मिलने के लिए आते व फ़ैज़ हासिल करते।

हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "दादा मियां" رحمۃ اللہ علیہने मस्जिद की तामीर का इरादा फरमाया फिर अपने अपने मुरिदीन के साथ काम शुरू किया। उस वक़्त पानी की ज़रूरत को पूरा

करने के लिए खुद भी अपने कांधों पर मश्क उठा कर पानी लाया करते उस वक़्त की तामीर और सुलेमानी मस्जिद की दीवारें और छत आज भी मजबूती के साथ अपनी जगह पर क़ायम है।

मस्जिद में वुज़ू के लिए हौज़ बनाई गई। अक्सर लोग इस बात पर मुस्तहिक़ थे कि इसके पानी से बुजुर्गों ने वुज़ू किया है और इस हौज़ के पानी में शिफा है। इसलिए अक्सर लोग अल्सर के मर्ज़ की शिफा के लिए इस हौज़ के पानी को पी कर और पिलाकर शिफायाब हुआ करते थे।

मस्जिद सुलेमानी का जो आज नाम है पहले ये नाम नहीं था।

हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "दादा मियां" رحمة الله علیهके विस◌ाल के बाद इसका नाम हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद गुलाम मूहियुद्दिन शाह رحمة الله علیهऔर हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ ओ कारी मौलवी सैय्यद अब्दुल मजीद शाह "जोबट वाले दादा मियां" رحمة الله علیهने मुरीदीन ओ मुतावस्सिलीन की गुज़ारिश पर "**मस्जिद सुलेमानी**" नाम पसंद फरमाया और फिर यही नाम हो गया।*

करामत 02 :- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

"सरदार ए जिन्नात के नाम खत" :-

हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "बड़े दादा मियां" रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर) के एक मुरीद जो जबलपुर के मुहल्ला बड़ी मदार टेकरी में रहते थे, और हर जुमेरात को खानकाहे सुलेमानिया (सुलेमानी मस्जिद के बाजू में) की फातेहा ख्वानी में बिला नाग़ा शिरक़त करते थे। कुछ यूं हुआ कि 2-3 हफ्ते उनकी शिरकत नहीं हुई तो बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ मुरीदीन से हाल मालूम किया तो पता चला कि आज कल काफी परेशान रहते हैं तब *दादा मियां* ने खबर कहला कर दूसरे दिन बुलवाया।

जब वो साहब हाज़िर हुए और क़दम बोसी के बाद अपना हाल बयान किया और फातेहा में न आने की माज़रत चाहते हुए वजह बयान की तो आंखों से आंसू जारी थे। उन्होंने बताया कि मेरी बेटी की तबीयत खराब है। न जाने क्या हुआ है कि गुमसुम सी रहती है और जब बोलती है तो आवाज़ भारी रहती है, ऐसा लगता है कि इस पर कोई जादू का असर है या कोई सवार है। ***दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह*** कुछ देर खामोशी के बाद अपने मुरीद से फरमाया तुम्हारी बेटी पर जिन्नात ने क़ब्ज़ा किया है और तसल्ली की तलक़ीन फरमाते हुए एक ख़त दिया और फरमाया ईशा की नमाज़ यहां अदा करके

रानीताल कब्रिस्तान वाले मैदान में चले जाओ **(नोट:- मस्जिद सुलेमानी से रानीताल की दूरी लगभग 2 कि.मी. से ज़्यादा है)** वहां एक मजलिस लगेगी, जब मजलिस का कुछ वक़्त गुज़र जाए तो तुम सदा देना कि मेरी फरियाद सुनी जाए और जब तुमसे पूछा जाए तो ये ख़त देकर कुछ देर रूकना इंशाअल्लाह तुम्हारे हक़ में फैसला होगा। ऐसा ही हुआ जब ख़त मजलिस के सरदार को दिया तो सरदार ने ख़त खोला और वअलैकुम अस्सलाम कहा और फिर हुक्म दिया कि उसे फौरन गिरफ्तार कर के यहाँ लाओ जो इस शख्स की बेटी को क़ब्ज़े में रखा है। कुछ देर के बाद सरदार ने कहा कि आप बेफिक्र वापस जाओ और *अल्लाह के वली (दादा मियां)* से मेरा सलाम कहना और मेरी क़ौम के इस शख्स की गुस्ताख़ी के लिए मैं शर्मिंदा हूँ और जिसने यह गुस्ताख़ी की है उसे सज़ा दे दी गई है।

वापस आ कर मुरीद साहब ने सारा माजरा *दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह* से बयान किया। जब घर वापस लौटे तो देखा बेटी बिल्कुल ठीक हो गई थी।

सुबहान अल्लाह

____

करामत 03:- *हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

मुरीद की मदद :-

हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "बड़े दादा मियां" क़ादरी, चिश्ती, निज़ामी, फख़री, सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह* नमाज़े मग़रिब के लिए वुज़ू फरमा रहे थे कि अचानक आपका चेहरे मुबारक की कैफियत बदली और आ़लम ए जलाल में आकर बधना *(मिट्टी का बना लोटा)* हवा में फेंक दिया जो सामने की दीवार पर जा लगा और चकनाचूर हो गया, तभी मुरीदीन घबरा गए और एक दूसरे से आपस में गुफ्तगू करने लगे कि *दादा मियां* का जलाल में आकर बधना दीवार पर इतनी ज़ोर से दे मारना समझ से बाहर है, *अल्लाह खैर करे*। अभी लोग आपस में बातें कर ही रहे थे कि दादा मियां ने पुरसुकून कैफियत में फरमाया कि मियां नत्थे खां ज़रा दूसरे बर्तन में पानी ले आएं, फिर दादा मियां ने दूसरे बर्तन के पानी से वुज़ू फरमाया और इबादत में मशगूल हो गए।

कुछ दिनों के बाद एक मुरीद साहब अपने बीवी बच्चों के साथ दादा मियां की बारगाह में हाज़िर हुए एक एक करके सभी ने दादा मियां की दस्तबोसी की, फिर मुरीद साहब ने भी दस्तबोसी की और हाथ को

पकड़े हुए अपना माथा हाथ पर रख कर रोते हुए कह रहे थे कि सरकार ने इमदाद फरमा कर मेरी जान और मेरे खानदान पर जो करम नवाज़ी फरमाई है तो दिल इस बात पर भर आता है और मुतमइन भी रहता है कि क़यामत के दिन भी आपकी मदद हासिल होगी, ये सुनकर दादा मियां ने फरमाया अल्लाह ने चाहा तो खात्मा ईमान के साथ होगा और आखिरत में भी मुतमइन रहोगे। मुलाक़ात के बाद दादा

मियां रहमतुल्लाह अलैह अपने हुजरे में तशरीफ ले गए उसके बाद वहाँ मौजूद लोगों ने मुरीद साहब से रोने का सबब जानना चाहा तो मुरीद साहब ने कहा कि वो कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर पास के गांव गए हुए थे वापसी में जंगल का रास्ता पार करने में देर हो गई और सूरज डूबने का वक्त आ गया और सड़क किनारे सामने के पहाड़ पर एक शेर ने मुझे देख कर दहाड़ मारी और मैंने _*"या_दादा_मियां_अल_मदद"*_ की सदा बुलंद करते हुए अपने पीरो मुर्शिद दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह का तसव्वुर किया तो देखता हूं कि कोई चीज़ आ कर शेर के सर पर बहुत ज़ोर से लगी और शेर भाग गया फिर मैंने बाक़ी का रास्ता तय किया और कल ही घर पहुंचा और आज अपने पीर की बारगाह में हाज़िर हुआ। जब लोगों ने वक़्त मिलाया तो पाया कि दादा मियां ने जो दीवार पर बधना मारा था वो इन साहब की मदद के लिए शेर पर लगा और हम लोगों को अब समझ आया कि मामला ये था।

सुबहान अल्लाह।।।

____

करामत 04:- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

***"आ़मिल आए क़दमों में"* :-**

एक बहुत कामयाब और मशहूर आमिल जो जबलपुर के मुहल्ला मुक़ादम गंज में रहा करते थे। और उनका मज़ार शरीफ आज भी मुक़ादम गंज मस्जिद (जबलपुर) के सामने मौजूद है, और लोग उनके मजा़र मुबारक को *छोटे दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह* के नाम से जानते हैं।

आमिल साहब अपने अमलियात और शोहरत की वजह से किसी को खातिर में न लाते थे, लेकिन अक्सर लोग उनसे *दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह* का तज़किरा किया करते तो आमिल साहब अपनी आदत के मुताबिक़ *दादा मियां* को भी खातिर में न लाते हुए खुशफहमी में भला बुरा कह देते थे। एक दिन *दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह* ने आमिल साहब से मुलाक़ात का इरादा किया। अपने खादिम से बग्घी बुलाने को कहा तब वहां मौजूद लोगों ने दादा मियां से अर्ज़ किया कि क़िब्ला हुज़ूर वहां न जाएं वो आमिल साहब किसी को खातिर में नहीं लाते और औल-

फौल बोलते हैं वग़ैरह वग़ैरह, लेकिन दादा मियां ने कहा कि मुझे मुलाक़ात करनी है इसलिए फौरन बग्घी बुलाओ। *दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह* के हुक्म पर बग्घी आ गई और दादा मियां ने मुक़ादम गंज चलने को कहा फिर बग्घी आमिल साहब के घर जा कर रुकि।

दादा मियां ने आमिल साहब से मुलाक़ात की तब आमिल साहब ने आने का सबब पूछा तो दादा मियां ने कहा कि साहब फलां चीज़ के बारे में मालूमात चाहिए लिहाज़ा आप अपने मुवक्किलों से कहें कि वो पता लगा कर बताएं। आमिल साहब ने कहा कि ये तो कोई बड़ी बात नहीं है अभी हुक्म देता हूँ अपने मुवक्किलों को, और फिर आमिल साहब ने अपने मुवक्किलों को हुक्म दिया।

काफी देर के बाद आमिल साहब ने देखा कि मुवक्किल अपनी जगह से हिले भी नहीं तो आमिल साहब ने जलाल में कहा कि तुम लोगों ने सुना नहीं या फिर मेरा हुक्म मानने से इंकार है तो मुवक्किलों ने जवाब दिया कि *"जब एक आमिल और एक वली दोनों एक साथ मौजूद हों तो हम पर वली की इताअत लाज़िम है लिहाज़ा हमें मुआफ करें इनके (दादा मियां) सामने आपका (आमिल साहब) हुक्म बजा लाना मुमकिन नहीं"।* बस इतना सुनना था कि आमिल साहब दादा मियां के क़दमों में गिर कर अर्ज़ करने लगे कि हुज़ूर मुझे मुआफ फरमाएं कि मैंने आप को पहचानने में भूल की है, मुझे अपनी खिदमत में कुबूल फरमाएं। दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि फिलहाल मैं चलता हूँ इंशाअल्लाह वक़्त आने पर आपकी बात पर ग़ौर करूंगा, और दादा मियां वहां से आ गए। आमिल साहब अक्सर दादा मियां से मुलाक़ात के लिए खानकाह शरीफ आते, मस्जिद में नमाज़ भी अदा करते और मुरीद होने का इरादा लिए खाली हाथ वापस चले जाते।

काफी अर्से (वक़्त) के बाद *दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह* ने उनको दाखिल ए सिलसिला कर मुरीद किया और दुआओं से नवाज़ा।

दरगाह -छोटे दादा मियां हज़रत अल्लामा मौलाना सरफराज़े आलम उर्फ आमिल साहब रहमतुल्लाह अलैह, मुकादमगंज जबलपुर।

____

करामत 05 :- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद गुलाम मुहियुद्दीन शाह "भैया जी" रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

"हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद गुलाम मुहियुददीन शाह "भैया जी" दादा मियां का सबक़" :-

एक दिन *दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह क़ादरी, चिश्ती, निज़ामी फख़री सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर) ने अपने मुरीद और पहले खलीफ़ा नत्थे खां* से फरमाया कि मियां नत्थे खां, वक़्त निकाल कर *गुलाम मुहियुददीन* का सबक़ तो सुन लिया करें तब नत्थे खां खलीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने कहा जी हुज़ूर।

अब खलीफ़ा नत्थे खां साहब हज़रत सरकार *"भैया जी"* के पास जा कर कहने लगे आप शहज़ादे हैं और आपके वालिद यानी मेरे पीरो मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक़ मैं आपको पढ़ाऊं, तो सरकार थोड़ा वक़्त निकाल कर मुझे मेरी ज़िम्मेदारी से फारिग़ कर दिया करें वरना आपके अब्बा हुज़ूर की नाराज़गी मुझ पर भारी पड़ेगी। यहां खलीफ़ा नत्थे खां साहब रहमतुल्लाह अलैह गुज़ारिश कर रहे थे और *हज़रत सरकार भैया जी रहमतुल्लाह अलैह* अपने खेल में इस क़द्र मशग़ूल थे कि मानो कुछ सुना ही न हो और भैया जी रहमतुल्लाह अलैह पर खलीफ़ा नत्थे खां की बातों का कोई असर नहीं हुआ। खलीफ़ा नत्थे खां साहब रहमतुल्लाह अलैह जा कर दूसरे कामों में लग गए।

अगले दिन खलीफ़ा नत्थे खां ने फिर कोशिश की लेकिन *भैया जी रहमतुल्लाह अलैह* ने बात अनसुनी करते हुए खेलकूद में लग गए, इस तरह हफ्तों गुज़र गए और खलीफ़ा नत्थे खां आरज़ू मिन्नतें ही करते रहे और हासिल कुछ भी न हुआ। एक दिन *बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह* ने कहा कि क्यों मियाँ नत्थे, गुलाम मुहियुददीन तंग तो नहीं करते, सबक़ तो बराबर सुनाते हैं?

खलीफ़ा नत्थे खां खामोश रहे और दूसरी बातें करने लगे जिससे दादा मियां को जवाब भी नहीं देना पड़ा और बात आई गई हो गई। कुछ दिनों बाद दादा मियां ने फिर यही कहा और फिर बात आई गई हो गई। इस तरह काफी वक़्त गुज़र गया, एक दिन *दादा मियां* ने कहा मियाँ नत्थे किसी रोज़ मैं भी सुनु *गुलाम मुहियुददीन* का सबक़,भला मुझे भी तो पता चले कि तुमने कैसा सबक़ सुना है, इतना सुनना था कि खलीफ़ा नत्थे खां साहब को घबराहट होने लगी खलीफ़ा नत्थे खां भैया जी के पास गये तो हज़रत खेल कुद में मशगूल थे खलीफ़ा नत्थे खां ने कहा कुछ पढ़ लें शहज़ादे हुज़ूर मुझ पर तरस ही खा लें लेकिन *"भैया जी"* को तो अपनी धुन थी इस बार फिर से खलीफ़ा नत्थे खां की नहीं सुनी। खलीफ़ा सोचने लगे की हज़रत बार-बार सबक़ सुनने को कह रहें हैं और शहज़ादे हैं कि कुछ पढ़ने का नाम नहीं ले रहे हैं, हमारे लिए तो आगे कुआं तो पीछे खाई है, इसी पशोपेश में एक बार फिर भैया जी के पास आए और हाथ पकड़कर कहा हज़रत कुछ तो पढ़ लो कम से कम, अलीफ, बे , ((ب)ही सही हज़रत

फिर हाथ छुड़ा कर नीम के पेड़ की तरफ भागे तो खलीफ़ा नत्थे खां ने पकड़ कर एक चांटा धीरे से लगा दीया तब भैया जी रोने लगे तो *दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह

अलैह ने आवाज़ लगाते हुए पूछा क्यों भई नत्थे मार दिया क्या *गुलाम मुहियुददीन को?* तब नत्थे खां घबरा गये ओर कहने लगे कि सरकार मैं रोज़ कोशिश करता हूं कि शहज़ादे पढ़ाई करें, मैं पढ़ाता हूं

लेकिन शहज़ादे हैं कि पढ़ते ही नहीं, मेरी तो जान आफत में है। आप की नाराज़गी हो या शहज़ादे की, मेरी तो आक़बत खराब होनी है,

ये सुनकर *हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां* ने कहा कि मियां नत्थे, मैंने तो सबक़ सुनने को कहा था पढ़ाने को नहीं कहा था, आप अगर कहते कि सबक़ सुनाओ तो ग़ुलाम मुहियुददीन ज़रूर सुनाते लेकिन आप तो सबक़ पढ़ने को कह रहे हैं तो भला जिसे सबक़ याद हो वो क्यों पढ़ता, फिर *दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने "भैया जी"* को सुनाने को कहा तो भैया जी ने क़ुर्आन पढ़ना शुरू किया और पढ़ते चले गए। खलीफ़ा नत्थे खां भी हैरान रह गए और कहा हुज़ूर मुझसे ग़लती हुई मुआफी चाहता हूं, तब दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि जिस तरह शेर का बेटा शेर होता है उसी तरह हाफिज़ का बेटा हाफिज़ है।

फिर हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद *ग़ुलाम मुहियुददीन शाह भैया जी रहमतुल्लाह अलैह* से फरमाया कि रोज़ाना नत्थे मियाँ को सबक़ सुना दिया करो।

नोट :- अक्सर लोगों का यही ख्याल रहा कि हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद ग़ुलाम मुहियुददीन शाह "भैया जी दादा मियां" पैदाइशी हाफिज़ हैं।

(वल्लाहो तआला आलम)

****

हासिलकर्ता :- * **क़िब्ला सैय्यद नयाब अली सुम्मा मद्देज़िल्लहू आ़ली***

मोबाइल नंबर :- 8964885401